गँगरीन

गँगरीन का अर्थ

गँगरीन यानि वह स्थिती जिसमे शरीर का कोई हिस्सा जंतुसंसर्ग अथवा घाव के कारण स्थायी रुप से नादुरुस्त होता है । रक्त प्रवाह की रुकावट अथवा जीवाणू का संक्रमण होने से उस हिस्से की मृत्यु जैसी स्थिती हो जाती है । खून की गुठली बनने से या रक्तनलिका के सिकुडने से उस हिस्से का रक्तप्रवाह खंडित होता है । गँगरीन मे उस विशिष्ट हिस्से को चीरा मारने से अथवा घाव होने से जंतुसंसर्ग होता है । जैसे पुराने जख्म, बंदूक की गोली के जख्म गँगरीन का परिणाम सामान्य रुप से हाथो की उंगलियाँ, पुर्ण हाथ, पैर के अंगूठे, पुर्ण पैर आदि ठिकोनो मे होता है ।गँगरीन के कारण मृत्यु की संभावना होती है। अतः शीघ्र उपचार अति आवश्यक होता है।

गँगरीन होने का धोखा कैसे बढता है

- मधुमेह
- हृदय की बाहर का धमनियों का रोग
- रक्त मे गुठली होने की परिस्थिती
- प्रतिकारात्मक शक्ति मे होने की परिस्थिती HIV
- ठंड के कारण होनेवाले घाव
- नसों के माध्यम से नशीली दवाओं की स्थिती
- कर्करोग

गँगरीन के लक्षण

प्रारंभ मे बुखार, दर्द सूजन से होता है ।दर्द एवं सूजन तेज गती से बढते है । मृत पेशी का हिस्सा जामुनी रंग अथवा काले रंग का दिखाई देने लगता है । जिसमे से लाल पिले रंग का रक्त स्त्राव होता है ।एवं दुर्गंध आती है ।

गँगरीन का ईलाज एवे उपचार

प्रभावित क्षेत्र की जाँच के बाद चिकित्सकउस पेशी का हिस्सा जाँच के लिए लेते है ।अतिशय गंभीर परिस्थिती मे हाथ और पैर का कथित हिस्सा पुर्ण रुप से निकाल दिया जाता है ।रोग ठिक होने के लिए प्रतिजैविक दिए जाते है ।दर्द एवं बुखार कम करने अन्य दवाईयाँ दी जाती है ।शल्यक्रिया के पश्चात रोगी के प्राणवायू की पूर्ती हायपरबॅरीक ऑक्सीजन थेरपी (HBO) दी जाती है ।HBO से रक्त की पूर्ती बढती है । एवं रोग के दुष्परिणाम कम होने मे मदद होती है ।शरीर के अन्य हिस्सो मे भी रोग फैलने पर शीघ्र उपचार की आवश्यकता होती है ।

गँगरीन को कैसे टाला जाता है

सभी प्रकार के जख्म एवं कटे फटे हिस्सो का ध्यान देना चाहिए। घाव को छून के पहले और बादमे हाथ स्वच्छ रुप से धो लेना चाहिए ।घाव अथवा जख्म को समय समय पर स्वच्छ पानी साबुन से साफ करते रहना चाहिए। मरहम पट्टी करते रहना चाहिए। मरहम पट्टी गीली होने की परिस्थिती मे या खराब होने पर बदलते रहना चाहिए।
अन्य स्वास्थ समस्याओ की धमनीयों का रोग अथवा रक्त की गुठली होने के रोग की व्यवस्था करनी चाहिए ।ऐसे परिस्थितीयो मे जख्मों मे संसर्गजन्य रोग होने की समस्या रहती है।
रक्त की गुठली (गाँठ) होना अथवा अपूर्ण रक्त की पूर्ती की परिस्थिती मे शीघ्र ही उपचार करना चाहिए ।रक्त की गाँठ या गुठली होने से हाथ पाँव मे ठिठुरना, दर्द, सुजन एवं लालपन दिखाई देता है ।रक्त की पूर्तता की कमी होने के लक्षण स्पष्ट दिखाई देना यानि हाथपाँव ठंड पडना , सफेद दाग जैसे अथवा स्तब्धता होना।

संदर्भ: मायक्रोमेडेक्स केअर नोटस सिस्टिम ऑनलाईन 2.0